अध्याय
10

# प्रेरक प्रसंग

आचार्य श्रीराम शर्मा

## गरीबों का मसीहा

उफ! यह कलमुँही गरीबी भी कितनी जालिम है! कैसी सिर चढ़ कर बोल रही है इन दिनों, जिसके पीछे पड़ गई , तो फिर उसकी कमर ही तोड़ डालती है। हाय! भूख से कैसे बिलबिलाते रहते हैं उनके बच्चे! और माँ चौबीसों घंटे काम-काम। बच्चों की खातिर मशीन की तरह काम करना भी तो पड़ता है, फिर भी यह शैतान पेट भरने का नाम ही नहीं लेता। पिता कठिन परिश्रम करके भी जब आर्थिक दशा सुधार नहीं पाता, तो लाचार होकर परिस्थितियों से समझौता कर लेता है। समझौता नहीं करे, तो और क्या करें? हे भगवान! तुम्हारी सृष्टि में यह विषमता कब तक चलती रहेगी।

महाकवि निराला इन्हीं विचारों में डूबते-उतरते पैदल चल रहे थे। कई दिनों का उपवास और उस पर पैदल। पैर साथ नहीं दे रहे थे, किन्तु फिर भी वे किसी प्रकार चले जा रहे थे। क्या करते और कोई गुंजाइश भी तो नहीं थी। जेब में एक फूटी कौड़ी तक नहीं थी कि इक्का-तांगा कर लेते। गरीबी में मसीहा को तो गरीब बनकर ही जीना पड़ता है, क्योकि उनकी दरिद्रता उनसे देखी कहाँ जाती? वे स्वयं मौज-मस्ती करें और उनके दूसरे भाई भूखों-नंगों की तरह रहें, ऐसी कल्पना तो उनके स्वप्न में भी नहीं उठती ।

इन्हीं परिस्थितियों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' दारागंज से लीडर प्रेस चले आ रहे थे, ताकि प्रेस से रॉयल्टी के कुछ पैसे मिल सके, तो क्षुधा तृप्त हो। प्रेस से रॉयल्टी के 104 रुपये लेकर, इक्के में सवार होकर अपनी मुँह बोली बहन महादेवी के निवास की ओर चल पड़े। इक्का अभी थोड़ी ही दूर चला था कि एक टेर सुनाई दी-बेटा! इस अभागिन भूखी को भी कुछ मिल जाय।

निराला ने इधर-उधर देखा तो ज्ञात हुआ कि पुकार उन्हीं को लक्ष्य करके की गई है, तो इक्का रुकवाया, स्वयं उतरे और सड़क के किनारे बैठी बूढ़ी भिखारिन के पास जा पहुँचे। अंतर में उठती करुणा को रोक न सके, बोले-माँ! हमारे रहते तुम्हें भीख माँगनी पड़े, यह कैसे हो सकता है?

और क्या करूँ बेटा! - बुढ़िया ने अपने क्षीण स्वर में कहा-'हाथ-पैर चलते नहीं। जब तक ठीक रहे तब तक मैंने भी स्वाभिमानवश किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया और पसीने की कमाई से अपने परिवार को पालती रही' पर मैं बेटों को फूटी आँख भी नहीं सुहाती। जिनके लिए मैने अपना खून-पसीना एक किया, आज उन्हीं लोगों ने दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया है। पेट पालने के लिए कुछ तो करना ही था, सो इसे विवश होकर अपना लिया। किसी प्रकार यह बूढ़ा पेट भर जाता है।

कवि हृदय तड़प उठा। पूछा -'यदि एक रुपया दे दूँ, तो कब तक भीख नहीं माँगोगी?'

'कल तक'- उत्तर मिला।

'यदि पाँच रुपये दे दूँ तो।'

'पाँच दिन तक भीख नहीं माँगनी पड़ेगी'-बुढ़िया ने जवाब दिया।

कवि ने रॉयल्टी की पूरी राशि एक सौ चार रुपये दे देने की बात कही तो बुढ़िया ने फिर कभी भीख न माँगने और इससे कोई धन्धा कर लेने का संकल्प लिया।

महाकवि सारी राशि बुढ़िया को दे, स्वयं खाली जेब इक्के में बैठकर महादेवी के घर की ओर चल पड़े, जहाँ

किराया भी महादेवी जी ने ही चुकाया। ऐसा था उनका विशाल कवि हृदय। आज भी उनकी आत्मा चीख-चीख कर कह रही है कि मानवता हृदय की विशालता से आती है, भौतिक सम्पन्नता से नहीं ।

## आदर्शवादी बिक नहीं सकता

दरवाजे पर खट-खट की आवाज हुई और अन्दर कमरे में नीचे फर्श पर दरी बिछाकर बैठे चौकी पर कागज रखकर लिख रहे गुप्त जी ने छोटे लड़के को आवाज देते हुए कहा-''देखना बेटा । कौन आए हैं?''

छोटे लड़के ने अपने पिता की आवाज सुन दरवाजा खोला और एक सज्जन अन्दर प्रविष्ट हुए। गुप्तजी उन्हें देखकर तुरन्त खड़े हो गए, ''बहुत दिनों बाद दिखाई दिए हो मित्र । कहाँ हो,आजकल क्या कर रहे हो? ''

आगन्तुक सज्जन जो उनके पुराने मित्र थे । उनके इन प्रश्नों के उत्तर तो दे ही रहे थे । साथ ही सोचते जा रहे थे कि 'भारत मित्र' जैसे प्रतिष्ठित अखबार के सम्पादक से मिलने जा रहा हूँ। घर में ठाट-बाट और रौनक नहीं होगी तो कम से कम मध्यवर्गीय परिवार जैसी स्थिति तो होगी ही । पर यहाँ चारों ओर फटेहाली दिखाई पड़ रही थी । 'भारत मित्र' हिन्दी दैनिक के सम्पादक श्रीबालमुकुन्द गुप्त की कमीज जो बहुत ही हल्के और सस्ते कपड़े की सिली हुई थी पीछे दीवार पर खूँटी पर टँगी हुई थी । गुप्त जी मोटी निब वाली सस्ते दामों वाली कलम से लिख रहे थे ।

आगन्तुक सज्जन इन सब वस्तुओं को, घर के वातावरण को बड़ी बारीक नजर से देख रहे थे। इधर-उधर की बातें चल रहीं थीं। सज्जन अपना मन्तव्य कहने ही जा रहे थे कि गुप्त जी का ज्येष्ठ पुत्र कमरे में आया और उसने बाजार से खरीद कर लाई हुई दो कमीजें अपने पिता के सामने रखी।

गुप्त जी ने उससे पूछा-''कमीज तो अच्छी है । कितने की है बेटा। ''''चार रुपये की।''''चार रुपये की?'' गुप्त जी ने बड़े ही विस्मय और आपत्ति जनक स्वर में कहा-''इतनी महँगी क्यों खरीदी? इतने में तो घर के सभी सदस्यों के लिए कपड़े बन सकते हैं''

आगन्तुक सज्जन ने कहा- ''बच्चे ही तो है गुप्त जी।'' यदि ये अभी अपनी पसन्द का खा-पी और पहन नहीं सकेंगे तो कब खाएँगे और पहनेंगे।

''लेकिन यह तो सरासर फिजूलखर्ची है। हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति इस योग्य नहीं है कि हम इतने महँगे कपड़े पहन सकें'' गुप्त जी ने कहा ''रही खाने पीने की उम्र वाली बात तो उन्हें मितव्ययिता अभी नहीं सिखाएँगे तो कब सिखाएँगे''।

अर्थाभाव वाली कठिनाई तो मैं दूर किए देता हूँ। मैं इसीलिए आपके पास आया हूँ। यह कहते हुए आगन्तुक मित्र ने पाँच हजार रुपये उनकी चौकी पर रख दिए।

यह देखकर गुप्तजी ऐसे चौंके, जैसे सैकड़ों साँप-बिच्छू उनके शरीर पर रेंग गए हों । गुप्तजी ने विस्मय, विस्फारित नेत्रों से मित्र महोदय की ओर देखते हुए कहा, क्या मतलब?

मित्र ने कहा- ''यह तो आपको मालूम ही है कि यहाँ की फौजदारी अदालत में दो धनिकों के बीच मुकदमा चल रहा है। दोनो पक्षों के सनसनी पूर्ण विवरणों द्वारा अपने पत्र में उनका आप समर्थन करें तो उन्हें लाभ हो सकता है। इसी के लिए मैं उनकी ओर से यह भेंट आपके पास लाया हूँ। ''

गुप्तजी ने धीरे पर गम्भीर स्वरों में कहा ''मित्र! तुम गलत समझे हो। अगर अर्थोपार्जन मेरा ध्येय रहा होता तो आप जो अभी चारों ओर घूर-घूर कर देख रहे थे और मेरी गरीबी पर आश्चर्य कर रहे थे वह न होता । गरीबी मेरी शान है। मैने स्वेच्छा से इसका वरण किया है, कारण कि मैं भारत के आम नागरिक से एक होकर जीना चाहता हूँ। उसके दु:ख -दर्द के समझने, अनुभव करने की ललक है। यही अनुभव मेरे साहित्य को प्राण देते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो गरीबी मेरा प्राण है । वह भी अन्याय की खातिर-कदापि सम्भव नहीं । '' गरीबी की गरिमा का गान सुनकर मित्र अपना रुपया उठाकर चलते बने और गुप्त जी पुन: लेखन में व्यस्त हो गए।

## अभ्यास

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने वृद्धा को अपनी रॉयल्टी के सारे पैसे किस भाव से दिए थे?
2. 'ग़रीबों का मसीहा' कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
3. आपके मतानुसार निराला जी को रॉयल्टी के सारे पैसे देने का निर्णय सही था या गलत कारण सहित बताइए?
4. ''अर्थोपार्जन मेरा ध्येय नहीं हैं, गरीबी मेरी शान है।'' इस कथन के भाव अपने शब्दों में लिखिए।
5. बालमुकुन्द जी भारत के एक आम नागरिक का जीवन जीना चाहते थे। कहानी के आधार पर वर्णन कीजिए।

## योग्यता विस्तार

1. ''मानवता हृदय की विशालता से आती हैं, भौतिक सम्पन्नता से नहीं।'' आज के सन्दर्भों में आप इस बात से कहाँ तक सहमत हैं? आलेख लिखिए।
2. स्वाभिमान के साथ मूल्यों को जीवन में आत्मसात करने के भाव पर आधारित कहानी एवं लघु नाटिका तैयार कीजिए ।
3. प्रतिष्ठित एवं अग्रणी कवि/लेखकों/पत्रकारों के प्रेरक प्रसंगों का संकलन कीजिए।

* * *